वी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल.एन.एम. यू.)

स्नातक (प्रथम खण्ड) - I
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश

डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक - 23-11-2020

मीमांसा दर्शन के अनुसार स्वर्ग और मोक्ष :

प्राचीन मीमांसको के मन में स्वर्ग (अर्थात. नित्य निरतिशय आनंद की प्राप्ति) ही जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। इसलिए कहा गया है - स्वर्गकामो यजेत। अर्थात जो स्वर्ग चाहता है वह यज्ञ करे। सभी कर्मों का अंतिम उद्देश्य है. स्वर्ग-प्राप्ति। परंतु. धीरे-धीरे मीमांसक गण भी अन्य भारतीय दर्शनों की तरह मोक्ष को सबसे बड़ा कल्याण (नि: श्रेयस) मानने लगे। उनका मत है कि यदि सकाम भाव से कर्म किया जाए तो उसके फलस्वरूप बारंबार जन्म लेना पड़ता है। जब मनुष्य समझ जाता है कि समस्त सांसारिक सुख-दुःख मिश्रित होते हैं, और जब वह इस सांसारिक जीवन से ऊब जाता है, तब अपनी वासनाओं को दमन करने की चेष्टा करता है और पापकर्म से विरत होकर उन सभी कर्मों को भी छोड़ देता है जो सुख-प्राप्ति के निमित्त किए जाते हैं। इस तरह पुनर्जन्म और भवबंधन से छुटकारा मिल जाता है। निष्काम धर्माचरण और आत्मज्ञान के प्रभाव से पूर्वकर्मों के संचित संस्कार भी क्रमशः लुप्त हो जाते हैं। तब इस जन्म के बाद पुनर्जन्म नहीं होगा और कर्म का बंधन छूट जाता है। अर्थात, जन्म-मरण के चक्र से सदा के लिए छुटकारा मिल जाता है। इसी को मुक्ति या मोक्ष कहते हैं। शरीर, मन, इंद्रिय सभी के बंधनों से आत्मा मुक्त हो जाता है और एक बार बंधन का नाश हो जाने पर वह कभी भी जन्म-मरण के जाल में नहीं फँसता।

बी. एम. ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल. एन. एम. यू.)
स्नातक (प्रथम खण्ड) - II
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश
डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक - 23-11-2020

योगमार्ग :

पातंजल- दर्शन में योग के स्वरूप और उसके भिन्न-भिन्न प्रकारों की सूक्ष्म आलोचना की गई है। योगाभ्यास के विविध अंगो और उनसे संबंद्ध अन्य आवश्यक विषयों पर भी गहरा विचार किया गया है। सांख्य दर्शन की तरह योग दर्शन का भी यही सिद्धान्त है कि विवेक ज्ञान (अर्थात शरीर, मन, इंद्रिय आदि से आत्मा भिन्न है ऐसा ज्ञान) से ही मुक्ति पाना संभव है। परंतु यह ज्ञान तभी हो सकता है जब शारीरिक और मानसिक वृत्तियों का दमन करते हुए अर्थात क्रमशः शरीर, इंद्रिय, मन, बुद्धि और अहंकार पर विजय प्राप्त करते हुए शुद्ध आत्मा या पुरुष के यथार्थ स्वरूप को पहचानें। तब हमें यह ज्ञान हो जाएगा कि शरीर, मन इंद्रिय, बुद्धि और सुख-दुःख के भोक्ता अहंकार- इन सबको आत्मा से अलग मानना आवश्यक है। इसी आत्मज्ञान या विवेक ज्ञान से मुक्ति अर्थात सकल दुःखों की निवृति होती है। आत्मज्ञान के साधक के लिए योग-दर्शन व्यावहारिक मार्ग बतलाता है। सांख्य का अधिक और इस सिद्धान्त पर है कि विवेक-ज्ञान मुक्ति का साधन है। इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए वह अध्ययन, मनन और निदिध्यासन का भी निर्देश करता है। परंतु योग मुख्यतः व्यावहारिक पहलू पर जोर देता है अर्थात मुक्ति या आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए किन उपायों का अवलंबन किया जाए। यही योग मार्ग है का उद्देश्य है।

बी. एम. इ. कॉलेज बेहेरी, दरभंगा (एल. एन. एम. यू.)

सनातन (द्वितीय खण्ड) - I
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश

डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
दिनांक - 23-11-2020

वेदांत-दर्शन के अनुसार सत्कार्यवाद :

किसी कार्य और उसके उपादान कारण में क्या संबंध है, यदि इसकी सूक्ष्म विवेचना की जाए तो ज्ञात होता है कि कार्य कारण से भिन्न वस्तु नहीं है। मिट्टी का बर्तन मिट्टी के अलावे और कुछ नहीं। सोने का गहना सोना मात्र है। पुनः कार्य अपने उपादान-कारण से अविच्छेद्य है। उसके बिना कार्य नहीं रह सकता। हम मिट्टी से बर्तन को पृथक नहीं कर सकते, न सोने से गहने को अलग कर सकते हैं। अतएव ऐसा समझना गलत है कि कार्य एक नई चीज है जो पहले नहीं थी और अब हुई है। तत्वतः वह हमेशा अपने उपादान कारण में विद्यमान थी। वस्तुतः हम अभाव पदार्थ से उत्पन्न होने की (असत् से सत होने की) कल्पना भी नहीं कर सकते। द्रव्य का केवल रूपांतर होना (एक रूप से दूसरे रूप में आना) हम सोच सकते हैं। यदि असत् से सत् की उत्पत्ति संभव होती तो बालू से भी तेल निकल सकता, न कि केवल तिल आदि वस्तुओं से। निमित्तकारण (जैसे तेली या कुम्हार या सोनार) की क्रिया से किसी नए द्रव्य की उत्पत्ति नहीं होती, केवल उस द्रव्य के निहित रूप की अभिव्यक्ति मात्र हो जाती है। अतएव कार्य को कारण से अन्य और उसमें पूर्व से विद्यमान जानना चाहिए। कार्य कारण की ही अवस्थामात्र है।

बी.एम.ए. कॉलेज बहेरी, दरभंगा (एल.एन.एम.यू.)

स्नातक (द्वितीय खण्ड) - II | डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह
व्याख्यान का संक्षिप्त अंश | दर्शनशास्त्र विभाग
| दिनांक - 23-11-2020

वेदांत-दर्शन के अनुसार व्यावहारिक दृष्टि से जगत् सत्य है :

इससे स्पष्ट हो जाता है कि शंकर व्यावहारिक दृष्टि से जगत को सत्य मानते हैं और विज्ञानवादी की तरह उसे विज्ञान मात्र नहीं मानते। विज्ञानवाद का खंडन देखने से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है। उनका कहना है कि स्वाभाविक जाग्रत अवस्था के विषय स्वप्न विषयों की कोटि में नहीं हैं, क्योंकि स्वप्न विषय जाग्रत अनुभव से बाधित होते हैं। अतएव जाग्रत अनुभव अधिक सत्य है। घट, पट आदि बाह्य विषय जो साक्षात रूप से मन के बाहर जान पड़ते हैं, मन के आभ्यंतरिक भावों की श्रेणी में नहीं रखे जा सकते, क्योंकि वे विषय सबको प्रत्यक्ष दिखलाई देते हैं। परंतु विज्ञान का अनुभव केवल उसी को होता है जिनके मन में वे हैं। शंकराचार्य इस बात को भी स्पष्ट कर देते हैं कि यद्यपि वह स्वप्न के दृष्टांत द्वारा जगत के स्वरूप का उपादान करते हैं तथापि वह बाधित स्वप्न-ज्ञान और बाधक जाग्रत-ज्ञान (जो व्यावहारिक जगत का आधार है) में बहुत अंतर है। इन दोनों के कारण रूप अज्ञान भी भिन्न-भिन्न हैं, इसे भी वह मानते हैं। प्रथम कोटि का अनुभव (जैसे - स्वप्न या भ्रम) व्यक्तिगत एवं तात्कालिक अज्ञान से होता है द्वितीय कोटि का अनुभव (जैसे नाना विषयों का प्रत्यक्ष) सार्वजनिक और अपेक्षाकृत स्थायी अज्ञान से होता है। प्रथम के लिए बहुधा 'अविद्या' और द्वितीय के लिए 'माया' शब्द का प्रयोग किया जाता है। परन्तु ये दोनो शब्द पर्यायवत भी व्यवहार में लाए जाते हैं।